गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ३७

# उटीप पञ्जी

## अनुक्रम आ अभिलेखीय सम्बन्ध

Decoding the Panji of Mithila · Volume 3

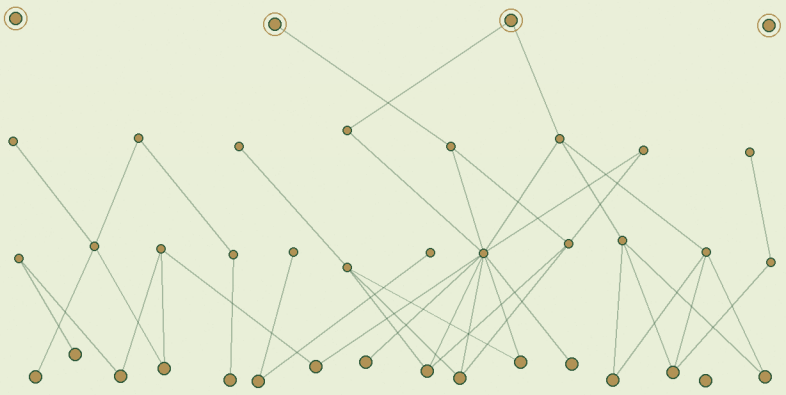

सम्पादक आ समीक्षक

**आशीष अनचिन्हार**

विदेह

ISSN 2229-547X

*खण्ड ३७*

# उटीप पञ्जी : अनुक्रम आ अभिलेखीय सम्बन्ध

मूल ग्रन्थकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

आधारग्रन्थ : Decoding the Panji of Mithila, Volume III

विदेह · प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X

**प्रकाशनाधिकार आ पाठस्रोत**

मूल शोध-ग्रन्थ : गजेन्द्र ठाकुर। सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार।

मूल ग्रन्थक उपलब्ध अधिकार-विवरण अनुसार © गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर।

समीक्षाक आधार Decoding the Panji of Mithila क सम्बन्धित मूल ग्रन्थ अछि। पञ्जी-पोथीक प्राचीन तिरहुता छवि अथवा स्वतंत्र पाण्डुलिपिक प्रत्यक्ष प्रमाणपरीक्षण एहि संस्करणमे दावा नहि कएल गेल अछि।

जाल-पता : https://www.videha.co.in/

प्रतिरूप : https://videha-ejournal.github.io/videha/

## अनुक्रमणिका

अध्याय १ — वंश, ग्राम आ समाजक सघन स्मृति ..... 6

अध्याय २ — उटीप : परिशिष्ट नहि, सम्बन्ध जोड़यवला प्रणाली ..... 7

अध्याय ३ — एक प्रविष्टिक पदच्छेद आ सम्बन्ध-परीक्षण ..... 8

अध्याय ४ — उटीपक सङ्केत, संक्षेप आ मूल पाठक प्रतिलोम-पठन ..... 9

अध्याय ५ — ४५०–२००१क काल-सीमा : वंशस्मृति आ दस्तावेजी तिथि ..... 11

अध्याय ६ — ग्रामक स्मृति : सरिसब-पाहीटोलसँ शाखागत विस्तार ..... 13

अध्याय ७ — स्थानान्तर आ वैवाहिक मार्गक असमान अर्थ ..... 15

अध्याय ८ — उपाधि आ ज्ञानपरम्पराक स्मृति ..... 16

अध्याय ९ — सरिसब–पाहीटोल–उजान : शुरुआती चौदह प्रविष्टिक सघनता ..... 17

अध्याय १० — बढ़ियाम–पवौलीक समूह : शीर्षकग्राम आ शरीरग्राम ..... 18

अध्याय ११ — भदुआर–चपाही–सोदरपुर : लौटैत शाखाक क्रम ..... 19

अध्याय १२ — दिगौन्ध–गंगोली–नवटोल : बहुग्राम सम्बन्धक परीक्षण ..... 20

अध्याय १३ — Entries 52-58 - Kanhauli, Ujan, Mangrauni, Mani, Sarisab, and Bhattpura ..... 21

अध्याय १४ — Entries 59-61 - Hati, Teterihar, Soderpur, Sarisab, and Mahiya ..... 23

अध्याय १५ — Entries 62-78 - Mahishi, Pali, Ishahpur, Gangoli, Hatadh, Lohna, Pahitola, and Mangrauni ..... 25

अध्याय १६ — Entries 79-99 - Balirajpur, Pahitola, Haripur, Bhattpura, Behat, Nagwar, Ghosaut, and Dharampur ..... 26

अध्याय १७ — Entries 100-119 - Ruchouli and the Puwaripar/Fawaripar Expansion ..... 28

अध्याय १८ — Entries 120-146 - Behat, Tarauni, Anilpur, Gangora, Dumra, Simarwad, Parhat, Ujan, Sharadapur, and Ishahpur ..... 30

अध्याय १९ — Entries 147-158 - Ratauli, Lohna, Shuklarahi, Gangoli, Najira, Betia, and Ujan.....31

अध्याय २० — Entries 159-178 - Rajoura, Rampur, Lohna, Sihauli, Ishahpur, Raima, Gerki, Chanaur, and Lalganj.....33

अध्याय २१ — Entries 179-195 - Madari, Sharadapur, Sulhani, Manglabani, Raima, Naduar, Naruar, Behat, and Navtol.....34

अध्याय २२ — Entries 196-207 - Tripurauli, Pude-Naruan, Mahrail, Koilkhaha, Dharampur, Phulgama, Gangoli, Khokha, Purnia, and Sotipura36

अध्याय २३ — Entries 208-214 - Loam, Sauria, Durgaganj, Bhakharouli, Kanhauli, Ruchouli, and Katihar.....38

अध्याय २४ — Entries 215-224 - Khandbala, Bhaur, Rajgram, Hemnagar, Deodhi, Shubhankarpur, Uchouri, Garhbaneli, and Dhanoulia.....40

अध्याय २५ — Full Glossary of Panji Terms.....42

अध्याय २६ — Abbreviation and Number-Key.....44

अध्याय २७ — Index Link Box.....46

अध्याय २८ — Personal Name Index.....48

अध्याय २९ — Scholar, Title, and Status Index.....50

अध्याय ३० — How to Reconstruct a Family Line from the Uptip.....51

अध्याय ३१ — Limits, Gaps, and Editorial Principles.....53

अध्याय ३२ — Conclusion: The Panji as a Civilization Archive.....55

## सम्पादकीय भूमिका

पञ्जीक व्याख्या करैत व्यक्ति, ग्राम, गोत्र, मूल, सन्तति, विवाह, मातृक आ उपाधिसूचक पद अलग-अलग पढ़ब आवश्यक अछि। मूल अंग्रेजी ग्रन्थक व्याख्या आ ऐतिहासिक पञ्जीक स्वतन्त्र प्रत्यक्ष पाठ एकहि प्रमाणस्तर नहि। एहि समीक्षामे उपलब्ध मूल पुस्तकक दावाक तर्कसंगति, पाठ-विभाजन, प्रमाणक सीमा आ सामाजिक व्याख्याक औचित्य जाँचल गेल अछि।

पहिने स्रोतमे लिखल कथन, तकर बाद व्याख्यात्मक अन्वय, आ अन्तमे ऐतिहासिक अनुमान—ई क्रम निर्णायक अछि। पञ्जीक वंशस्मृतिसँ सामाजिक सम्बन्धक अध्ययन सम्भव अछि; मात्र एहि पाठमात्रसँ जैविक डीएनए-परीक्षणक प्रमाण नहि बनैत।

## अध्यायवार मूल अध्ययन

### अध्याय १ — वंश, ग्राम आ समाजक सघन स्मृति

पहिल अध्याय पञ्जीक त्रिविध चरित्र देखबैत अछि—वंश-स्मृति, स्थान-मानचित्र आ सामाजिक सम्बन्धक अभिलेख। एहि आधारपर उटीपक प्रविष्टिसभकेँ व्यक्तिगत जीवन-कथा बनाय कऽ पढ़बाक जोखिम स्पष्ट होइत अछि। आरम्भिक वंशपाँति संक्षिप्त अछि; तकर सामाजिक अर्थ भेटैत अछि पूर्वापर पाँति, ग्राम-सूचक पद आ पारस्परिक उल्लेखक सहयोगसँ।

ग्रन्थक आरम्भेँ ‘सूची’केँ नियन्त्रण-साधन मानल गेल अछि। १–२२४क प्रविष्टि आ सरिसब, पवौली, खण्डबला, सोदरपुर सन मूल-समूह एकटा उपयुक्त अन्वेषण-पथ दैत अछि। मुदा अनुक्रम-सम्पूर्णता आ अर्थ-सम्पूर्णता समान नहि। सभ प्रविष्टि समेटल रहलासँ प्रत्येक नामक सम्बन्ध सुनिश्चित भऽ गेल, एहन निष्कर्ष नहि निकालल जाएब।

विलुप्त, दुरूह अथवा बहुअर्थी वंश-शब्दक स्थलपर अनिश्चितता दर्ज करब अध्यायक पद्धतिगत सफलता बनि सकैत अछि। विशेषत: एकहि व्यक्ति-नाम अनेक ग्राममे भेटला पर समानता प्रमाणित करबाक लेल पिता, शाखा आ क्रॉस-सन्दर्भ एकत्र चाही। सामाजिक नक्साक आकर्षक रूपकेँ अभिलेखीय सावधानीक संग पढ़ब एहि अध्ययनक मूल कसौटी अछि।

### अध्याय २ — उटीप : परिशिष्ट नहि, सम्बन्ध जोड़यवला प्रणाली

दोसर अध्याय ‘उपटीप’ आ ‘उ.टी.’कैं हाशियाक टिप्पणी मात्र नहि मानैत अछि। ग्रन्थक अनुसार ई एकटा कार्यशील सम्बन्ध-सूत्र अछि जे एक परिवारसँ आन परिवार, एक ग्राम-समूहसँ दोसर समूह आ एक सङ्ख्याबद्ध पाँतिसँ दोसर पाँति जोड़ैत अछि। एहि अवधारणासँ पञ्जीक पाठ रेखीय सूचीसँ सम्बन्धजालक रूप लैत अछि।

एहि अवधारणा पर एकटा महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक शर्त अछि : सन्दर्भसूत्र भेटब आ ओकर लक्ष्य-पाँतिक अर्थ निश्चित होयब दू चरण अछि। जँ सङ्केत अपूर्ण, प्रतिलिपिक्रम फेरल वा एक सङ्ख्या बहुअर्थी अछि, तँ सम्बद्ध वंश-मानचित्रक निष्कर्ष स्थगित राखल जाय। उटीपक नोड–कड़ी प्रणाली बनेबाक आकर्षण एकरा स्वतः सत्यापन नहि दैत अछि।

सम्पादकीय दृष्टिसँ प्रत्येक उटीप-सम्बन्ध लेल स्रोत-प्रविष्टि, लक्षित प्रविष्टि, सम्बन्धक प्रकार आ मूल शब्दभेदक चारि पृथक् आधार लाभकारी होयत। एहि विन्याससँ पाठक स्वयं जाँचि सकत जे कड़ी पितृसम्बन्ध अछि, विवाहक मार्ग अछि अथवा केवल सहउल्लेख। ग्रन्थक व्याख्यात्मक उपलब्धि ओतहि अधिक प्रभावी अछि जतय ओ ई भेद सुरक्षित राखैत अछि।

### अध्याय ३ — एक प्रविष्टिक पदच्छेद आ सम्बन्ध-परीक्षण

तेसर अध्याय नाम, पिता-पुत्र पद, सुता, ग्राम, सङ्केत, उपाधि आ समापन-चिह्नकेँ अलग-अलग पहचानबाक अभ्यास प्रस्तुत करैत अछि। सरल देखाइत एक नाम अनेक सम्बन्धसँ घेरल रहैत अछि; तेँ अनुवादसँ पहिने पदच्छेद आवश्यक अछि। एहि पाठ-पद्धतिक उपयोग विशेषतः उटीपक सँख्या-सन्दर्भ आ ग्राम-शाखाक समागममे पड़ैत अछि।

सम्बन्ध-पदक शाब्दिक अर्थ आ अभिलेखीय कामकेँ अलग देखब जरूरी अछि। पिता-पुत्रक निश्चय, कन्या अथवा विवाहजन्य सम्बन्ध आ स्थान-स्मृति अपन-अपन प्रकारक कड़ी अछि। सभकेँ एकहि परिवार-वृक्षक रेखा बना देलासँ सामाजिक सम्बन्धक ऐतिहासिक बनावट नष्ट होइत अछि। ग्रन्थक विवेचनक मुख्य शक्ति एहि भिन्न कड़ीकेँ पाठक सामने उजागर करब अछि।

मूल प्रविष्टिक चित्र, मूल अक्षररूप, देवनागरी रूपान्तरण, पदच्छेद आ व्याख्याक पृथक् स्तम्भ रहला पर अभ्यास दोहराओल जा सकत। उपलब्ध मूल पुस्तक एहि बुनियादी सिद्धान्तक पक्षमे अछि; मुदा अन्तिम वैज्ञानिक पुनरुत्पाद्यताक दावा करबा लेल प्रत्येक निर्णायक पाठक स्रोत-पृष्ठ आ पाठान्तर सूची आवश्यक रहत।

### अध्याय ४ — उटीपक सङ्केत, संक्षेप आ मूल पाठक प्रतिलोम-पठन

चारिम अध्याय ‘Symbols, Abbreviations, and Formulae’ उपटीपक तकनीकी भाषा सिखबैत अछि। उ.टी., उ० टी० आ उपटीप सन रूप अभिलेखक अन्तरसम्बद्ध पूरक प्रविष्टिक संकेत अछि; लेखक स्पष्ट करैत छथि जे एकरा आधुनिक पुस्तकक साधारण पादटिप्पणी मानब पर्याप्त नहि। कखनो एहि सूचकक पाछाँ शाखा, कन्या-सम्बन्ध, विवाह-गृह वा ग्रामपरिवर्तनक विस्तारित अभिलेख जुड़ैत अछि। तें संख्यासहित उ.टी. देखलापर ओकरा हटेबाक बदला मूल क्रममे सुरक्षित राखि सम्भावित लक्ष्य-प्रविष्टि खोजबाक आवश्यकता अछि।

अध्याय शा. आ प्र. सन संकेतक विवेचनमे एकल अर्थ ठोपबाक विरुद्ध सावधानी दैत अछि। विशेषतः प्र. कखनो परिचित नाम, उपनाम वा व्यवहारिक पहिचानक दोसर रूप खोलि सकैत अछि; प्रत्येक ठाम यान्त्रिक विस्तार सँ एकहि व्यक्तिक दू नाम दू अलग व्यक्ति बनि सकैत अछि, अथवा दू व्यक्ति गलत ढङ्गेँ एक भऽ सकैत छथि। स्रोतक वर्तनी, विराम, कोष्ठक आ संख्या जथावत् रखब एतय पाठ-संरक्षणक शर्त बनैत अछि।

अभिलेखमे लघु सूत्र ओतबे महत्त्वपूर्ण अछि जतबा विस्तृत वंशवृत्त। कतेको बात संक्षेपकेँ पड़ोसी पाँति, ग्राम-शीर्षक आ पिता-सन्तति सम्बन्धक आधारपर खोले बिनु नहि बुझल जा सकैत अछि। लेखक एहि प्रसंगिक पढ़ाइक नीति स्पष्ट करैत छथि। तथापि जँ किछु संक्षेपक विस्तार स्वयं पुस्तकमे ‘may depend’क रूपमे देल अछि, तँ शोध-संस्करणमे ओहि अनिश्चिततातेँ संरक्षित करब जरूरी अछि; अनुवादकक सुविधा लेल एके अर्थ पूरे किताबमे निर्धारित करब अनुचित होयत।

समीक्षाक अनुसार अध्यायक सबसँ उपयोगी उपलब्धि ‘प्रतिलोम-पठन’क सम्भावना अछि : आधुनिक व्याख्यासँ पाठक फेर मूल संकेत आ संख्याधारी संदर्भ धरि घुरि सकथि। एहि लेल प्रत्येक सम्यक् शोधप्रविष्टिमे मूल लेखन,

सम्भावित लिप्यन्तरण, सम्बन्धक प्रकार आ लक्ष्य-पञ्जीक सङ्केत दर्ज रहय। मूल अभिलेख आनन्ददायी कथाक रूपमे नहि, पुनःपरीक्षण योग्य दस्तावेजक रूपमे सुरक्षित रहत।

### अध्याय ५ — ४५०–२००९क काल-सीमा : वंशस्मृति आ दस्तावेजी तिथि

पाँचम अध्याय ‘The Time Frame: 450 A.D. to 2009 A.D.’ अपन शीर्षकक दीर्घ अवधिक अर्थ स्वतः सीमित करैत अछि। लेखक स्पष्ट करैत छथि जे एहि संख्यासँ प्रत्येक उटीप-पाँतिक सटीक ईस्वीसन निश्चित तिथि नहि निकलैत अछि। ग्रन्थक कालक्रम मुख्यतः सम्बन्धक क्रम अछि : पुरान पूर्वज, पछिला ग्रामस्मृति, विवाहसँ जोड़ल घर, उपाधि आ आधुनिक नाम एके प्रविष्टि-समूहमे भेटि सकैत अछि। एहि आधारपर अध्याय सामान्य राजवंश-कालक्रमक बदला बहुस्तरीय सामाजिक कालक विचार प्रस्तुत करैत अछि।

कालक ई बहुस्तरता वंशक लगातार पठनीयता आ स्रोतक अखण्ड लिखित प्रमाण—एहि दुनूकेँ अलग करबाक आग्रह करैत अछि। एकटा परिवारक कथित पुरान मूलपुरुष ४५० ईस्वीसँ जोड़ल जाए, मुदा सुरक्षित लिखित प्रविष्टि बहुत पछाँक हो; आ आधुनिक संशोधन फेर नव प्रकरण जोड़ि दे। एहि तीन अवस्थाकेँ एकहि वर्षक्रमक अविच्छिन्न हस्तलिखित अभिलेख कहब पर्याप्त साक्ष्य बिना उचित नहि। पुस्तक स्वयं एहि भ्रामक सरलीकरणक चेतावनी दैत अछि, जे एकर पद्धतिगत परिपक्वता देखबैत अछि।

एकहि गोपाल, लक्ष्मीनाथ वा रघुनाथ नाम अनेक पीढ़ीमे दोहरायल भऽ सकैत अछि। काल-निर्णय लेल केवल नामक अनुक्रम नहि, पिता-नाम, ग्राम, विवाहसम्बन्ध, उपाधि आ क्रमांकक संयुक्त परीक्षण आवश्यक अछि। विद्वानक पदवी अथवा आधुनिक पेशा सापेक्ष कालक सहायक संकेत भऽ सकैत अछि, मुदा स्वतंत्र अभिलेख बिना समयक सटीक दिन वा वर्ष निर्धारित नहि करैत अछि। एहि कारणेँ काल-चिह्नक सन्दर्भसूची आ स्रोत-वर्गीकरण निर्माण करब भविष्यमे उपयोगी रहत।

समीक्षा एहि अध्यायक विचारकेँ ‘सम्बन्धक काल’ कहैत अछि, कारण पञ्जी घटनाक क्रमानुसार नहि, नातेदारी आ ग्रामगत कड़ीक आधारपर

संचालित अछि। एकर लाभ परम्पराक सामाजिक निरन्तरता बुझबाक अवसर अछि; सीमा ई जे ई निरन्तरता सम्पूर्ण मिथिला अथवा सभ समुदायसँ समान रूपमे सम्बन्धित नहि ठहरै। स्रोतमे जतेक परिवार आ शाखा दर्ज अछि, इतिहासक साक्ष्य प्रारम्भिक रूपसँ ओतबे धरि पहुँचैत अछि।

### अध्याय ६ — ग्रामक स्मृति : सरिसब-पाहीटोलसँ शाखागत विस्तार

छठम अध्याय ‘Villages as Genealogical Anchors’ उटीपमे ग्रामक भूमिकाकेँ साधारण पता सँ बहुत आगाँ लऽ जाइत अछि। सरिसब-पाहीटोल, खांगुड़-सरिसब-पाहीटोल सन उद्घाटन-समूह कोनो परिवारक स्वतंत्र पता नहि, वंशक आरम्भिक स्थानिक सन्दर्भ अछि। एकहि खण्डक भीतर दरिहरा, सोदरपुर, करमहा, नरउन, माण्डर, पाली आदि नाम आवि सकैत अछि; एहि स्थानसभक एकठाम उपस्थितिक कारणेँ सीधा जन-प्रवास स्वतः सिद्ध नहि होइत अछि।

पुस्तक विशेष रूपसँ ‘सँ’क प्रसंगगत प्रयोग पर बल दैत अछि। सम्बन्धक ई कड़ी कखन मूलग्राम, कखन कन्या वा विवाहद्वारा बनल घर, आ कखन शाखा वा निवासक सूचक अछि—ई तय करबाक लेल पूर्ण अभिलेखीय रचना पढ़ब पड़ैत अछि। एकहि ग्राम एक परिवारक मूलस्मृति होइते दोसर परिवारक विवाहस्थल हो सकैत अछि। एहन अवस्थामा ग्रामक संख्या गनब आसान होयत, मुदा ग्रामसभक वास्तविक सम्बन्ध-प्रकार निश्चित करब कठोर पाठ-परीक्षण माँगैत अछि।

अध्यायक तुलनात्मक सम्भावना विशेष उल्लेखनीय अछि : ग्रामनामक निरन्तर सह-उपस्थिति सँ विवाह-जाल, विद्वान-गृहक निकटता आ शाखागत विस्तारक प्रवृत्ति खोजल जा सकैत अछि। मुदा सह-उपस्थितिक बारम्बारता सँ स्थायी बसावट, सम्पत्ति-संबंध वा वास्तविक यात्राक दिशा निकालब लेल जमीनक दस्तावेज, ऐतिहासिक नक्सा आ दिनांकित प्रमाण चाही। पुस्तकक ग्रामक ‘आधार-बिन्दु’क अवधारणा एहि सीमाक भीतर अधिक सार्थक देखाइत अछि।

अध्याय ४क उटीप-संकेत, अध्याय ५क समय-स्तर आ अध्याय ६क ग्राम-स्मृति एकठाम रखलापर पञ्जीक विस्तारपूर्वक पढ़बाक त्रिस्तरीय पद्धति उभरैत अछि : अंकित अभिलेख, सम्बन्धक क्रम आ स्थलसम्बन्ध। अनुक्रम-सूचीमे एकहि ग्रामक सभ उल्लेखक स्रोत-पाँति सुरक्षित कएल जाए, तँ

पाठक स्वयं जाँचि सकताह जे कुन कड़ी निश्चित अछि आ कुन केवल सम्भावित।

### अध्याय ७ — स्थानान्तर आ वैवाहिक मार्गक असमान अर्थ

सातम अध्याय उटीपमे ग्रामसँ ग्रामधरि देखाओल मार्गक अर्थ खोलैत अछि। एहन मार्ग प्रत्येक बेर भौतिक प्रवास नहि; शाखाक वैवाहिक सम्बन्ध, स्मृत मूलग्राम अथवा नातेदार घरक सँगे जुड़ल भऽ सकैत अछि।

एकहि रेखाकेँ प्रवासक सुनिश्चित मार्ग कहला पर पञ्जीमे बाँचल सामाजिक संकेतक बहुअर्थिता हेराइत अछि।

अध्यायक आन्तरिक अनुक्रमकेँ मानि ग्रामशीर्षक, व्यक्तिनाम आ सम्बन्ध-सूत्र पृथक् रखने इतिहासलेखनक सीमा स्पष्ट होइत अछि। कोन मार्ग लिखित तथ्य अछि आ कोन पुनर्निर्मित परिकल्पना—से संगहि चिन्हित करब चाही।

“The daughter-link should never be treated as a secondary detail.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 7]

“A marriage network is a map without drawn lines.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 7]

### अध्याय ८ — उपाधि आ ज्ञानपरम्पराक स्मृति

आठम अध्याय विद्वत्-उपाधि, शिक्षण-सम्बन्ध आ पदानुक्रमक पञ्जीगत उपयोग पर केन्द्रित अछि। कखनो उपाधि नामक पहिचानमे सहयोग करैत अछि; मुदा उपाधिसँ व्यक्ति-विशेषक मौलिक कृति, गुरु-शिष्य सम्बन्ध अथवा वास्तविक पद स्वतः प्रमाणित नहि भऽ जाइत अछि।

एहि पाठकेँ माटिक परिवार-इतिहाससँ अलग नहि देखब चाही; विद्या, ग्राम आ विवाहक मार्ग परस्पर काटैत अछि। विद्वत्ताक पदवीक साथेँ मूल प्रविष्टि संख्या सुरक्षित रखने अधिक सटीक तुलना संभव अछि।

“Mithila was not only a region of villages and lineages.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 8]

“Titles often become visible through marriage networks. A daughter-link may connect one village branch with a scholarly house, a title-bearing house, or an estate-linked family. The entry may not explain this in modern prose. It may simply place a daughter-link, a village-name, and a titled person…” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 8]

### अध्याय ९ — सरिसब-पाहीटोल-उजान : शुरुआती चौदह प्रविष्टिक सघनता

नवम अध्याय प्रविष्टि १-१४क सरिसब-पाहीटोल-उजान-दुर्गागञ्ज समूह प्रस्तुत करैत अछि। एके समूहमे मूलग्राम, शाखा, व्यक्तिनाम आ परिवार-सम्बन्धक अनेक संकेत रहिते एकल ग्राम-इतिहासक सरल कथन पर्याप्त नहि। सूचीक आरम्भिक क्रम स्वयं प्रमाण अछि; ओकरा फेर सँ मनमोन क्रम देब संदर्भ-विन्यास बदलब होयत।

अनुक्रम-पञ्जीमे सरिसबक खांगुड़, सकुरी आ जोंकी जकाँ नामसँ सम्बन्ध अध्यायक जाँचसँ जोड़ल अछि। एहि सहवर्तनकेँ प्रत्यक्ष पिता-पुत्रक दावा नहि बना कऽ शाखागत सम्बन्धक दिशा माननाइ उचित अछि।

“The entry then turns to Dharmanath’s daughter-linked line through Nandan and Kundan.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 9]

“The later lines take Dharmanath’s sons or daughter-linked issue toward Khandbala and Babu Tantreshwar Singh.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 9]

### अध्याय १० — बढ़ियाम-पवौलीक समूह : शीर्षकग्राम आ शरीरग्राम

दसम अध्याय प्रविष्टि १५–२४मे बढ़ियाम, पर्वपल्ली, रूपौली आ संबंधित शाखासभ पढ़ैत अछि। अध्यायक महत्त्व ई अछि जे प्रविष्टिक शीर्षकग्राम आ ओकर भीतर उपस्थित अन्य ग्रामक सूची एक नहि। स्थानान्तरक सम्भावना ओतबा धरि अछि जतबा सम्बन्धसूत्र वा स्रोतक्रम समर्थन करैत अछि।

जोड़ीकी आ सरिसब-शाखाक पहिनुक संदर्भ एतय फेर जुड़ैत अछि; एकरा बेसी भरल वंशचित्र बनेबाक लोभसँ बचबाक चाही। जँ एकहि नामक अनेक ठाम उल्लेख अछि तँ पितृनाम आ शाखा-सूचकक आधार पर पहिचान निश्चित होयत।

“The social logic of these entries is movement.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 10]

“Entry 19 continues Badhiyam-Parvapalli. Kamaladatt’s daughter-linked routes move first toward Mandar-Dhir-Gokul and Budhwal-Dullah, then through an अपरा unit toward Khoaāl-Bhushan-Hemnath and Sarisab-Hireshwar. Kamaladatt’s son Janakidatt moves through Karamha-Lakshmidatt-Kishor and Mandar-Prannath. Janakidatt’s son Girjadatt then moves through Karamha-Gokul-Hemkar and Khandbala-Jagat Singh. The entry is a clear example…” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 10]

### अध्याय ११ — भदुआर-चपाही-सोदरपुर : लौटैत शाखाक क्रम

एगारहम अध्याय प्रविष्टि २५–४०मे सरिसब, भदुआर, चपाही, सोदरपुर, लालगञ्ज आ रामनगरक प्रविष्टिसभक तुलनात्मक अनुक्रम दैत अछि। एक क्षेत्रक फेर आबि जाएब कथानकमे पुनरावृत्ति नहि, स्रोतक शाखागत जालक प्रत्यक्ष विशेषता अछि।

एहि समूहमे प्रत्यक्ष रूपेँ उल्लिखित नाम आ व्याख्याकारक शाखापुनर्निर्माण अलग राखब महत्त्वपूर्ण अछि। सूची क्रमांकक अभाव अथवा संक्षेपकेँ काल्पनिक वृत्तान्तसँ नहि भरल जाए।

“Entry 25 begins with “उ.टी. सरिसब-सरिसब” and then opens “अथ सरिसब सोदरपुर ग्राम.” The heading shows a renewal of the Sarisab field through Soderpur.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 11]

“Entry 30 is introduced in the supplied text with a numbered note: “उ.टी सरिसव सोदरपुर उजान गंगाधर मिश्र, सरिसब विद्याधर मिश्र.” This heading announces a Sarisab-Soderpur-Ujan route through Gangadhar Mishra and Vidyadhar Mishra.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 11]

### अध्याय १२ — दिगौन्ध–गंगोली–नवटोल : बहुग्राम सम्बन्धक परीक्षण

बारहम अध्याय प्रविष्टि ४१–५१ धरि दिगौन्ध, गंगोली, नवटोल, बटौरी, बैरी, भट्टपुरा आ कछुआक जाल खोलैत अछि। समूहक वंशानुक्रम पढ़बाक काल ग्रामनामक पुनरावृत्ति, विवाह-सङ्केत आ सम्भावित प्रतिलोम-संदर्भ एकठाम देखल जाए।

एहि प्रविष्टिसभकेँ केवल स्थानसूची कहब सामाजिक सम्बन्धक परतसभ छोड़ब होयत। मुदा ‘सम्पर्क’ आ ‘मूलवंशीय समानता’ एक नहि; ई दूनू संकल्पनाक अन्तर अध्यायक आलोचनामे स्पष्ट रहब चाही।

“Entries 41-51 form the Digaunth-centered cluster. Entry 41 opens the Puwaripar Uptip from Digaunth and explicitly begins the Digaunth-Soderpur village record. Entry 42 moves from Digaunth to Gangoli. Entries 43-44 move toward Navtol and contain modern scholarly markers such as professor and Maithili writer alongside older…” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 12]

“Entry 46 is headed “उ.टी. दिगउन्ध सँ बइरी, सनकोर्थु.” It continues from Shivanandan/Nena to Mahavir, who is linked with Pali-Hemnath-Shrinath and Khandbala-Maharaj Rudra Singh.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 12]

## अध्याय १३ — Entries 52-58 - Kanhauli, Ujan, Mangrauni, Mani, Sarisab, and Bhattpura

उटीप प्रविष्टि ५२मे ‘उपटीप कन्हौलीसँ उजान’ आ ‘अथ कन्होली सोदरपुर ग्रामारम्भ’ दुनू अभिव्यक्ति आयल अछि। पहिल कथन मार्ग-स्मृति, दोसर ग्रामक अभिलेखीय आरम्भ अछि; दुनूकेँ एकटा वास्तविक यात्राक विवरण मानब आवश्यक नहि। प्रविष्टि ५६मे ‘मानीसँ सरिसब’क नव दिशा खुलैत अछि। ई दुहरी आरम्भ-व्यवस्था देखबैत अछि जे एकहि अध्यायमे एकसँ बेसी स्थानीय उपसमूह सम्भव अछि।

संयुक्त ग्राम-रेखाकेँ विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना ‘वहाँ गेल’ आ ‘वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित’ दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

“Entry 52 opens with “उपटीप कन्हौलीसँ उजान” and then states “अथ कन्होली सोदरपुर ग्रामारम्भ.” This tells the reader that Kanhauli is not being read as a loose place-name.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 13]

“Entry 56 opens a new subcluster: “मानीसँ सरिसब” and “अथ मानी सोदपुर ग्रामारम्भ.” Mani is therefore not merely a body-place inside Kanhauli.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 13]

प्रविष्टि ५२–५८क अध्ययन अघिल अध्यायक शाखासँ नव ग्राम-सम्बन्धक सम्बन्ध स्थापित करैत अछि। एकरा सरल ग्रामसूची मानलासँ पितृवंश, विवाहक सम्बन्ध आ स्थानीय उपाधि एक संग दबि सकैत अछि। प्रत्येक प्रविष्टिक क्रमांक, मूल पद आ बगलवला सूत्र सुरक्षित राखि पाठक समान नामक भिन्न व्यक्ति पहिचान करथि।

## अध्याय १४ — Entries 59-61 - Hati, Teterihar, Soderpur, Sarisab, and Mahiya

प्रविष्टि ५९–६१क संक्षिप्त खण्डमे हाटी–सोदरपुर आ तेतरिहार–सोदरपुरक समान आधार ‘सोदरपुर’ अछि, मुदा दूनूक अलग ग्रामारम्भ लिखल अछि। एकहि अभिलेखीय वर्गक भीतर अलग ग्राम-निबन्धनकेँ परिवारक अभिन्न शाखा मानि लेब पूर्वनिर्णय होयत। बेटी-पक्षीय शब्द आ वैदिक उपाधिक संग एहि ग्रामसूत्रक संयुक्त पठन अधिक सटीक होयत।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति–दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

“Entry 59 begins with the Hati-Soderpur heading and then formally opens with “अथ हाटी सोदरपुर ग्राम.” The word अथ marks a new beginning, and ग्राम indicates that the source is opening a village-based record.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 14]

“Entry 61 opens “उपटीप महिया” and then states “अथ महिया सोदरपुर.” This is another formal village opening under the Soderpur field.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 14]

मात्र तीन प्रविष्टिक अध्ययनमे हाटी, तेतरिहार, सोदरपुर, सरिसब आ महिया जकाँ ग्राम सामने अबैत अछि। एतय लम्बाइ कम रहलो सामाजिक जाल छोट मानब अनुचित होयत। सीमित पाठ-साक्ष्यक आधारपर जे

जुड़ाव स्पष्ट नहि, ओकरा वंशक्रमक निश्चित कड़ीक रूपमे प्रस्तुत नहि करबाक चाही।

## अध्याय १५ — Entries 62-78 - Mahishi, Pali, Ishahpur, Gangoli, Hatadh, Lohna, Pahitola, and Mangrauni

प्रविष्टि ६२मे ‘अथ महिषी पाली ग्रामारम्भ’ खण्डक नूतन केन्द्र खोलैत अछि। मंगरौनी, दुर्गागञ्ज आ कटिहार सम्बन्धी स्मृतिक उपस्थिति बतबैत अछि जे पालीक शाखाजाल एक ग्राम धरि सीमित नहि। मुदा नगर, ग्राम आ वंशसम्बन्धक एकहि पङ्क्तिमे आविर्भाव प्रवासक निश्चित तिथि नहि बनबैत। ६२–७८क क्रमागत पाठक महत्त्व एहि लेल अछि जे बादक प्रविष्टिक अर्थ आरम्भिक ग्रामशीर्षकसँ प्रभावित होइत अछि।

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति–दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

संयुक्त ग्राम-रेखाकेँ विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना ‘वहाँ गेल’ आ ‘वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित’ दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

“Entry 63 is not a new village start but a continuation of the Entry 62 field.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 15]

“Entry 69 is headed “उपटीप महिषीसँ हटाढ़ साघू झा गंगोली महेश झा.” This is a compound heading.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 15]

बढ़ल प्रविष्टिसमूहमे महिषी आ पालीक संग ईशहपुर, गंगोली, लोहना आ मंगरौनीक उल्लेख अछि। एकहि ग्रामक बारम्बार उल्लेखकेँ समान शाखाक प्रमाण मानबाक पहिने प्रत्येक नोंदक सम्बन्धसूचक शब्द जाँचल जाए। एहि अनुक्रममे विद्वत्-उपाधि भेटला पर मूल अभिलेखक शब्द आ व्याख्याक अनुमान अलग राखू।

## अध्याय १६ — Entries 79-99 - Balirajpur, Pahitola, Haripur, Bhattpura, Behat, Nagwar, Ghosaut, and Dharampur

प्रविष्टि ७९क ‘उपटीप बलिराजपुर–पाहीटोल’ आ ‘अथ बलिराज पुर हरिअमर ग्रामारम्भ’ एकहि स्थलकेँ दुइ अलग अभिलेखीय कोणसँ राखैत अछि। अगिला प्रविष्टिसभमे भट्टपुरा, बेहट आ घुसौत जकाँ स्थान आबैत अछि; ई विवाह, शाखा अथवा प्रतिलिपिक क्रॉस-सम्बन्धक बहुविकल्प खोलैत अछि। ७९–९९क क्रमक रक्षासँ एहि विकल्पसभक परीक्षण सम्भव अछि; नक्शामे जोड़ल सीधा रेखा तकर विकल्प नहि।

संयुक्त ग्राम-रेखाकेँ विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना ‘वहाँ गेल’ आ ‘वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित’ दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

“Entry 79 opens the new field with “उपटीप बलिराजपुर-पाहीटोल” and “अथ बलिराज पुर हरिअमर ग्रामारम्भ.” This double signal is important.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 16]

“The entry demonstrates a pattern found throughout this book: a named personal anchor in the heading is not the entire entry.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 16]

विस्तारित ग्रामसमूह उटीपक मूल-आधारित स्थानिक गठजोड़ देखबैत अछि। पाहीटोल आ भट्टपुराक पुनरावृत्ति पाठक पूर्व समूहक प्रतिध्वनि अछि, मुदा उभयत्र समान व्यक्तिक निरन्तरता स्वतः सिद्ध नहि। मूल, ग्राम आ पितृसम्बन्धक संयुक्त मिलानक बादेँ शाखाक इतिहास लिखल जा सकैत अछि।

## अध्याय १७ — Entries 100-119 - Ruchouli and the Puwaripar/Fawaripar Expansion

रुचौलीक १००म प्रविष्टिमे ‘पुवारिपार रूचौलि उजान’क संग ‘अथ रूचौलि करमहा ग्रामारम्भ’ लिखल अछि। एतय पुवारिपारक क्षेत्र-चिह्न, रुचौलीक ग्राम आ करमहा मूल-वर्गक सम्बन्ध एकटा त्रिस्तरीय पठन माँगैत अछि। एहि तीनूकेँ समान पद मानलासँ वंश-पहिचान आ भूगोल गड्डमड्ड भऽ जाइत अछि। बादक नरुआड़–करमहा आरम्भ एहि आन्तरिक ढाँचाक पुनरावृत्ति देखबैत अछि।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति–दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

“Entry 106 begins the Naruar or Naddūar-Karmahā material with “अथ नड्डुआर करमहा ग्रामारम्भ.” Dukhbhanjan, Murlidhar, Matinath, Mitranath, Gokhulnath, Jaladhar, Haladhar, Uvvidhar, Mahadev, Khojendra, Markandeya, Janardan, Govardhan, and several daughter-links appear.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 17]

“Entry 116 brings Hati and Kalyanfar into clearer focus.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 17]

पूर्वी ग्रामसमूहसँ पुबरिपार/फवरिपारक संक्रमण मात्र नाम परिवर्तन नहि; ई अभिलेखक नव समूहीकरण अछि। नामक विकल्परूपकेँ अभिलेखमे दूनू रूपमे राखल जाए, परस्पर प्रमाणित समानार्थकताक बिना शब्दकोशीय एकरूपता नहि थोपल जाए।

## अध्याय १८ — Entries 120-146 - Behat, Tarauni, Anilpur, Gangora, Dumra, Simarwad, Parhat, Ujan, Sharadapur, and Ishahpur

बेहटसँ तरौनी धरि विस्तारमे प्रविष्टि १२२ ‘अथ तरौनी करमहा ग्रामारम्भ’ लिखैत अछि; १२५मे झंझारपुर–करमहा खुलैत अछि। एकहि मूल-वर्गक बहु ग्रामारम्भक सम्बन्ध दिस ई संकेत करैत अछि, मुदा व्यक्तिसभक समाननाम अथवा पुत्रसम्बन्धक जाँच बिना ई पूर्ण वंश-वृक्ष नहि। अध्यायमे बहुविवाहसँ सम्बन्धित उल्लेख सेहो अछि; एकरा महिला-वंश आ सन्तति-गणनाक पृथक् साक्ष्यरूपेँ सुरक्षित राखब चाही।

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति–दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

संयुक्त ग्राम-रेखाकेँ विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना ‘वहाँ गेल’ आ ‘वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित’ दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

“Entry 121 carries the Behat continuation into Pokhrauni.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 18]

“Entry 127 closes the Jhanjharpur-Lakhnour run and leads into the next opening.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 18]

एहि अध्यायमे तरौनी, अनलपुर, गंगोरा, डुमरा, उजान आ ईशहपुर जकाँ ग्रामक संयोग बढ़ैत अछि। ग्रामनामक घनत्व वंशस्थलान्तरक प्रत्यक्ष दर नहि। पाठ-अनुसन्धानमे एक-एक नोंदमे परिवार, मातृग्राम, विवाह-स्थान आ वंश-शाखाक भेद राखनाइ मुख्य काज अछि।

## अध्याय १९ — Entries 147-158 - Ratauli, Lohna, Shuklarahi, Gangoli, Najira, Betia, and Ujan

रतौलीक प्रविष्टि १४७मे ‘अथ रतौली दरिहरा ग्रामारम्भ’क स्पष्ट सूचनासँ खण्डक सीमा चिन्हित अछि। १४८–१५८मे लोहना आ गंगोलीक विस्तार आ समान उपाधिसभक उपस्थिति छैक। भिन्न पाँतिक एके नामकेँ ओहि व्यक्ति मानबासँ पूर्व पिता आ समय-कड़ीक तुलना अनिवार्य अछि। ई अध्याय पञ्जीक वर्णक्रम नहि, अनुक्रम ही प्रमाणात्मक इकाइ होयबाक महत्त्व बतबैत अछि।

संयुक्त ग्राम-रेखाकेँ विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना ‘वहाँ गेल’ आ ‘वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित’ दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

“Entry 147 opens with “अथ रतौली दरिहरा ग्रामारम्भ.” This phrase makes Ratauli a new village-start, not a passing reference.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 19]

“Entry 150 narrows the corridor toward Lohna. Neekanand, Phalanand, Bodhanand, Dolanand, Girjanand, Taranand, Ambikanand, Dinanand, Bhimanand, Medhanand, Chumman, Feku or Ugranand, Babu Lokanand, Gokhulanand, Mathuranand, and Mokshanand or Bular appear. The heading shows that Lohna is now an active branch-route from Ratauli, while repeated links to…” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 19]

एहि संक्षिप्त समूहमे गंगोली, नजीरा, बेतिया आ उजानक पुनरावृत्ति देखाइत अछि। पाछाँक अध्यायसँ सहायक तुलनाक सम्भावना अछि; मुदा ग्राम-साम्यकेँ अभिलेखीय सम्बन्ध-बन्धनक स्थान नहि देबाक चाही। ‘समाप्ति’क अनुमान केवल अन्तिम ग्रामनाम देखिकय नहि करब।

## अध्याय २० — Entries 159-178 - Rajoura, Rampur, Lohna, Sihauli, Ishahpur, Raima, Gerki, Chanaur, and Lalganj

प्रविष्टि १६३मे ‘अथ सिहौलि माण्डर ग्रामारम्भ’ भेटैत अछि, जे माण्डर-सम्बद्ध नव ग्राम-अवधारणा स्पष्ट करैत अछि। १५९–१७८क बीच रजौरा, रामपुर, लोहना, सिहौली आ लालगञ्जक अनेक दिशा अछि। एकटा नोडसँ निकलल अनेक सम्बन्धक अर्थ ठोस विवाहपद, पुत्रपद वा शाखासूत्रक आधारपर अलग-अलग तय हो; केवल ग्रामनामक आधारपर एकल प्रवास-आख्यान नहि बनब।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति–दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

“Entry 159 opens as “उपटीप पुवारिपार रजौरासँ उजान” and begins the Rajoura field under Mandar.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 20]

“Entry 163 opens “अथ सिहौलि माण्डर ग्रामारम्भ.” This makes Sihauli an explicit Mandar-linked village-start.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 20]

एहि समूहमे रजौरा, रामपुर, लोहना, सिहौली, रैमा, चनौर, लालगंज आदिक संबंध एकट्ठा भेल अछि। एकर विशेषता विस्तृत स्थानिक फैलाव मात्र नहि, पूर्व पुबरिपार–उजान सूत्रक क्रमक आन्तरिक पुनर्विन्यास अछि। प्रविष्टिक मूल क्रममे परिवर्तन सामाजिक भूगोलक पाठकेँ सेहो बदलि सकैत अछि।

## अध्याय २१ — Entries 179-195 - Madari, Sharadapur, Sulhani, Manglabani, Raima, Naduar, Naruar, Behat, and Navtol

प्रविष्टि १७९–१९५ मे मादरी, शरदापुर, सुल्हनी आ बेहटक क्रम पञ्जीक भूगोल लगातार बदलैत देखबैत अछि। मुदा ग्रामक्रमसँ ककरो यात्रा-पथक निश्चितता नहि निकलैत। अध्याय मूल समूहक सीमा अक्षुण्ण रखैत अछि; ओहि सीमापर कटैत वंशसम्बन्धक सम्भावना स्वतंत्र चिन्हन माँगैत अछि। एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति–दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

संयुक्त ग्राम-रेखाकेँ विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना ‘वहाँ गेल’ आ ‘वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित’ दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

“Entry 180 continues Madari-Sharadapur and develops the Mani/Vidyapati and Son branch.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 21]

“Entry 183 opens a new field: Sulhani-Naruan with Manglabani or Mangrauni.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 21]

“प्रविष्टि 179-195 - Madari, Sharadapur, Sulhani, Manglabani, Raima, Naduar, Naruar, Behat, and Navtol” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि। मुदा ग्राम-पङ्क्तिसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

## अध्याय २२ — Entries 196-207 - Tripurauli, Pude-Naruan, Mahrail, Koilkhaha, Dharampur, Phulgama, Gangoli, Khokha, Purnia, and Sotipura

प्रविष्टि १९६–२०७क आरम्भिक ‘अथ त्रिपुरौली नरउन ग्रामारम्भ’ सूत्र पिछला सुल्हनी समूहसँ नव आधारक परिवर्तन देखबैत अछि। एहिमे पुड़े-नरउन, महरैल आ पूर्णियाक स्थानात्मक विस्तार अछि। परवर्ती शाखाकेँ पूर्ववर्ती व्यक्तिक सीधा सन्तति मानबाक लेल आन्तरिक सम्बन्ध-पद चाही।

संयुक्त ग्राम-रेखाकेँ विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना ‘वहाँ गेल’ आ ‘वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित’ दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

“Entry 200 is marked by the simple heading 'उपटीप-पुवारिपार १००'.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 22]

“The main route of Chapter 22 is: त्रिपुरौली-दहौरा -> पुड़े-नरउन -> महरैल -> कोइलरवाहा/कोइलखाहा -> धरमपुर / धानेरामपुर -> फुलगामा / उजान / भट्टपूरा / पाहीटोल -> गंगोली / खौखा / पूर्णियाँ / सोतिपुरा.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 22]

“प्रविष्टि 196-207 - Tripurauli, Pude-Naruan, Mahrail, Koilkhaha, Dharampur, Phulgama, Gangoli, Khokha, Purnia, and Sotipura” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि। मुदा ग्राम-पङ्क्तिसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

## अध्याय २३ — Entries 208-214 - Loam, Sauria, Durgaganj, Bhakharouli, Kanhauli, Ruchouli, and Katihar

प्रविष्टि २०८–२१४ छोट खण्ड होयतो अनेक स्वतंत्र ग्रामारम्भ खोलैत अछि। लोआम, सौरिया, दुर्गागञ्ज आ कटिहारक सहवर्तनकेँ एकहि शाखाक एकल गमनक रूपमे पढ़ब जोखिमपूर्ण अछि। प्रत्येक ग्राम-उद्घाटनक पहिने आ पाछाँक सम्बन्धसूत्र मिलान करब चाही।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति–दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

“The entries repeatedly combine royal or landed status terms with ordinary Panji marriage formulae.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 23]

“Entry 210 is headed as Fawaripar Sauria-Loam to Durgaganj.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 23]

“प्रविष्टि 208-214 - Loam, Sauria, Durgaganj, Bhakharouli, Kanhauli, Ruchouli, and Katihar” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि। मुदा ग्राम-पङ्क्तिसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

## अध्याय २४ — Entries 215-224 - Khandbala, Bhaur, Rajgram, Hemnagar, Deodhi, Shubhankarpur, Uchouri, Garhbaneli, and Dhanoulia

खण्डबला–भौर आ हेमनगर–गढ़बनैलीक २१५–२२४ प्रविष्टि उटीपक अन्तिम संधि अछि। अन्तिम प्रविष्टि छपल रहबासँ पुरा वंशशृंखला समाप्त भऽ गेल—एहन ऐतिहासिक अनुमान नहि होइत। पुस्तकक अध्याय-सीमा सम्पादकीय अछि, सामाजिक सम्बन्धक वास्तविक आखिरी सीमा नहि।

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति–दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

संयुक्त ग्राम-रेखाकेँ विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना ‘वहाँ गेल’ आ ‘वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित’ दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

“Entry 215 opens the Bhaur-Ravandbala village beginning. Bhaiyan or Gaurinath, Ajit Singh, Udhot Singh, Ugra Singh, Mohan Singh, Jagat Singh, Padmanabh Singh, Jayanarayan Singh, Ayodhyanath or Bengali Singh, Gaurinath Singh or Govind Ji, Riddhinarayan Singh, Artinarayan Singh, Ghuran Singh, Dwarkanath Singh, Anant Singh, Ravinath Singh, and…” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 24]

“The main route of Chapter 24 is: खण्डबला-भौर -> रवण्डबला-राजग्राम -> हेमनगर-पूर्णियाँ -> भौर-राजग्राम -> भौर-डचौढ़ी/मव्वी डचोढ़ी -> शुभंकरपुर-उचौरी-गढ़बनैली-धनौलिया डचोढ़ी -> final Puwaripar closing entry.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 24]

“प्रविष्टि 215-224 - Khandbala, Bhaur, Rajgram, Hemnagar, Deodhi, Shubhankarpur, Uchouri, Garhbaneli, and Dhanoulia” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि। मुदा ग्राम-पङ्क्तिसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

## अध्याय २५ — Full Glossary of Panji Terms

पञ्जी-शब्दकोशमे ‘सुत’, ‘सुता’, ‘अपरा’, ‘ग्रामारम्भ’ आ ‘उपटीप’ सन पद पाठन-सुविधा दैत अछि। मुदा कोशक परिभाषा अभिलेखक प्रत्येक प्रसंगमे अपरिवर्तनीय नहि। एकटा पद जहाँ बहुअर्थी अछि, ओतय भिन्न प्रविष्टिसँ उदाहरण अलग राखब विधिगत सत्यनिष्ठा होयत।

एहि प्रकारक उपकरणक सही मूल्य एकर पुनर्परीक्षण-सम्भावनामे अछि, नहि कि हर अनिश्चित प्रविष्टिक कृत्रिम समाधानमे। अस्पष्ट अंक, रिक्त स्थान आ दूहरायल नाम स्रोत-सूचनाक भागक रूपमे बचल रहय।

अनुक्रमणिका आ सहायक सारिणी स्वयं प्राथमिक वंशाभिलेख नहि। ओकर प्रत्येक कड़ी मूल प्रविष्टि, स्थान-सूत्र, विकल्पपाठ आ स्रोत-पृष्ठ धरि पाछाँ खोजल जा सकय, तखने सहायक व्यवस्था शोधयोग्य बनत।

“A Panji entry is compact because it assumes that the reader already knows the grammar of the register.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 25]

“Use the glossary alongside the entry text, not as a substitute for it.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 25]

“Full Glossary of Panji Terms” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

सामाजिक श्रेणी अथवा पदवी एकटा अभिलेखीय सूचना अछि, व्यक्ति विषयक सम्पूर्ण सामाजिक सत्य नहि। ऐतिहासिक वर्गीकरणक शब्दानुसरण आ वर्तमान समयक मानवीय सम्मान दुनूक रक्षा करबाक हेतु सीमित स्रोत-निष्कर्ष आवश्यक अछि।

### अध्याय २६ — Abbreviation and Number-Key

सङ्क्षेप आ सङ्ख्याक कोश प्रविष्टिक मूल क्रमाङ्क, भीतरक सन्दर्भ, कड़ी आ शाखा-गणनाक अन्तर खोलैत अछि। अङ्क देखिते तिथि अथवा पीढ़ी मानि लेब सामान्य भूल अछि। अध्याय उपयोगी तखन होयत जखन प्रत्येक अङ्कक स्थानीय व्याकरण जाँचयोग्य उदाहरणसहित देखाओल जाए।

अनुक्रमणिका आ सहायक सारिणी स्वयं प्राथमिक वंशाभिलेख नहि। ओकर प्रत्येक कड़ी मूल प्रविष्टि, स्थान-सूत्र, विकल्पपाठ आ स्रोत-पृष्ठ धरि पाछाँ खोजल जा सकय, तखने सहायक व्यवस्था शोधयोग्य बनत।

नाम वा सूचकांकक मानकीकरणमे मूल लिपि आ सम्पादित लिप्यन्तरण अलग-अलग स्तम्भमे रखनाइ उपयुक्त अछि। एकहि संकेत अनेक पाठमे दोसर अर्थ लेने हो तँ टिप्पणीमे ओकर विकल्प स्पष्ट कएल जाए।

“The Uptip source uses several layers of reference at once.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 26]

“A phrase such as प्र. बच्ची, प्र. टूनाकौ, प्र. यादव जी, or प्र. शक्तिनाथ points to a styled or alternate name.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 26]

“Abbreviation and Number-Key” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

सामाजिक श्रेणी अथवा पदवी एकटा अभिलेखीय सूचना अछि, व्यक्ति विषयक सम्पूर्ण सामाजिक सत्य नहि। ऐतिहासिक वर्गीकरणक शब्दानुसरण आ वर्तमान समयक मानवीय सम्मान दुनूक रक्षा करबाक हेतु सीमित स्रोत-निष्कर्ष आवश्यक अछि।

### अध्याय २७ — Index Link Box

स्थानसूचक अनुक्रमणिका आधुनिक प्रशासनिक गजेटियर नहि अछि। ओकर लक्ष्य ग्रामसम्बन्धक मूल सन्दर्भ धरि पाठककेँ पहुँचेब अछि। एकहि स्थानक प्रचलित आ स्रोतगत नामक अन्तरण स्पष्ट रखल जाय; ओहि बिनु अनुवाद-आधारित खोज मूल अभिलेखक पाठान्तरकेँ हेरा सकैत अछि।

नाम वा सूचकांकक मानकीकरणमे मूल लिपि आ सम्पादित लिप्यन्तरण अलग-अलग स्तम्भमे रखनाइ उपयुक्त अछि। एकहि संकेत अनेक पाठमे दोसर अर्थ लेने हो तँ टिप्पणीमे ओकर विकल्प स्पष्ट कएल जाए। एहि प्रकारक उपकरणक सही मूल्य एकर पुनर्परीक्षण-सम्भावनामे अछि, नहि कि हर अनिश्चित प्रविष्टिक कृत्रिम समाधानमे। अस्पष्ट अंक, रिक्त स्थान आ दूहरायल नाम स्रोत-सूचनाक भागक रूपमे बचल रहय।

“A Panji entry is rarely only a sequence of personal names.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 27]

“To trace a family line, first identify the running entry number, then copy the exact place phrase attached to the relation.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 27]

“Index Link Box” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

एहि अध्यायक पाठमे अस्पष्टता वा विकल्पपाठक चर्चा भेटैत अछि। आलोचनाक पहिल शर्त अछि—मूल अस्पष्ट पाठ सुरक्षित रखनाइ, तकर बाद सम्भावित पठनक औचित्य बतौनाइ; सुधारित पाठकेँ मूल अभिलेखक विकल्प नहि बनाओल जाए।

### अध्याय २८ — Personal Name Index

व्यक्तिनामक सूची स्रोतक पुनरावृत्त नाम सभकेँ आवश्यकतानुसार पृथक् रखैत अछि। ई अनुक्रमणिकाक सीमा नहि, गुण अछि। जीवनाथ अथवा हरिनाथक अनेक उपस्थिति स्वतंत्र हो सकैत अछि। मूल स्रोतक्रम, पितृनाम आ शाखा-सूत्र बिना व्यक्ति-समानीकरण नहोए।

एहि प्रकारक उपकरणक सही मूल्य एकर पुनर्परीक्षण-सम्भावनामे अछि, नहि कि हर अनिश्चित प्रविष्टिक कृत्रिम समाधानमे। अस्पष्ट अंक, रिक्त स्थान आ दूहरायल नाम स्रोत-सूचनाक भागक रूपमे बचल रहय।

अनुक्रमणिका आ सहायक सारिणी स्वयं प्राथमिक वंशाभिलेख नहि। ओकर प्रत्येक कड़ी मूल प्रविष्टि, स्थान-सूत्र, विकल्पपाठ आ स्रोत-पृष्ठ धरि पाछाँ खोजल जा सकय, तखने सहायक व्यवस्था शोधयोग्य बनत।

“This index does not pretend that every repeated name is one person.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 28]

“A proper citation of a Panji person should include the name, the nearest father or son marker, the relevant place phrase, and the entry or source-number field.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 28]

“Personal Name Index” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

सामाजिक श्रेणी अथवा पदवी एकटा अभिलेखीय सूचना अछि, व्यक्ति विषयक सम्पूर्ण सामाजिक सत्य नहि। ऐतिहासिक वर्गीकरणक शब्दानुसरण

आ वर्तमान समयक मानवीय सम्मान दुनूक रक्षा करबाक हेतु सीमित स्रोत-निष्कर्ष आवश्यक अछि।

### अध्याय २९ — Scholar, Title, and Status Index

विद्वत् उपाधि आ पदविक सूचीक उपयोग बौद्धिक संस्कृतिक अध्ययनमे कएल जा सकैत अछि। मुदा ‘कवि’ सन सम्मानसूचक पदसँ कोनो विशिष्ट पद्यक लेखकीयता स्वतः प्रमाणित नहि। स्रोत-पाठ, ग्रन्थनाम आ स्वतंत्र साहित्यिक साक्ष्यक मिलान निश्चयक पहिने चाही।

अनुक्रमणिका आ सहायक सारिणी स्वयं प्राथमिक वंशाभिलेख नहि। ओकर प्रत्येक कड़ी मूल प्रविष्टि, स्थान-सूत्र, विकल्पपाठ आ स्रोत-पृष्ठ धरि पाछाँ खोजल जा सकय, तखने सहायक व्यवस्था शोधयोग्य बनत।

नाम वा सूचकांकक मानकीकरणमे मूल लिपि आ सम्पादित लिप्यन्तरण अलग-अलग स्तम्भमे रखनाइ उपयुक्त अछि। एकहि संकेत अनेक पाठमे दोसर अर्थ लेने हो तँ टिप्पणीमे ओकर विकल्प स्पष्ट कएल जाए।

“The Panji does not record persons only as private individuals.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 29]

“The title index should always be used together with the Place Index and the Personal Name Index.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 29]

“Scholar, Title, and Status Index” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

सामाजिक श्रेणी अथवा पदवी एकटा अभिलेखीय सूचना अछि, व्यक्ति विषयक सम्पूर्ण सामाजिक सत्य नहि। ऐतिहासिक वर्गीकरणक शब्दानुसरण आ वर्तमान समयक मानवीय सम्मान दुनूक रक्षा करबाक हेतु सीमित स्रोत-निष्कर्ष आवश्यक अछि।

## अध्याय ३० — How to Reconstruct a Family Line from the Uptip

उटीपसँ वंशरेखा बनेबाक अध्याय पितृ-सूत्र आ सुता-मार्गकेँ एके वृक्षमे दर्शाबैक समस्या उठबैत अछि। उचित समाधान केवल खूबसूरत आकृति नहि, प्रत्येकर असली सम्बन्ध-साक्ष्य होयत। जे रेखा अनुमानपर आधारित अछि से मूल कथनसँ भिन्न चिह्नित हो।

नाम वा सूचकांकक मानकीकरणमे मूल लिपि आ सम्पादित लिप्यन्तरण अलग-अलग स्तम्भमे रखनाइ उपयुक्त अछि। एकहि संकेत अनेक पाठमे दोसर अर्थ लेने हो तँ टिप्पणीमे ओकर विकल्प स्पष्ट कएल जाए।

एहि प्रकारक उपकरणक सही मूल्य एकर पुनर्परीक्षण-सम्भावनामे अछि, नहि कि हर अनिश्चित प्रविष्टिक कृत्रिम समाधानमे। अस्पष्ट अंक, रिक्त स्थान आ दूहरायल नाम स्रोत-सूचनाक भागक रूपमे बचल रहय।

“The Uptip Panji compresses a family line into a dense chain of names, relation markers, places, cross-references, titles, and damaged or dotted readings.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 30]

“A Panji family line is not reconstructed by reading only the names.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 30]

“How to Reconstruct a Family Line from the Uptip” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

एहि अध्यायक पाठमे अस्पष्टता वा विकल्पपाठक चर्चा भेटैत अछि। आलोचनाक पहिल शर्त अछि—मूल अस्पष्ट पाठ सुरक्षित रखनाइ, तकर

बाद सम्भावित पठनक औचित्य बतौनाइ; सुधारित पाठकेँ मूल अभिलेखक विकल्प नहि बनाओल जाए।

### अध्याय ३१ — Limits, Gaps, and Editorial Principles

अध्याय ३१–३२ : उटीपक अनिश्चितता आ ‘सभ्यताक अभिलेख’ रूपक

उटीप पर अन्तिम दू अध्याय पञ्जीक सीमासभ आ एकरा सभ्यता-अभिलेख कहबाक प्रस्ताव राखैत अछि। पहिल आलोचनात्मक प्रश्न ज्ञानक सीमा अछि: अनेक समान नाम, असम्पूर्ण सम्बन्ध, अन्यार्थी सङ्क्षेप आ बदलैत ग्रामनामक अवस्थामे सभ वंश-शाखा साफ-साफ पुनर्निर्मित नहि भऽ सकैत। दोसर प्रश्न रूपकक अछि: ‘सभ्यताक अभिलेख’ व्यापक इतिहासक महत्त्व बतबैत अछि, मुदा एहि रूपकक कारण वर्जित महिला, अश्रुत समूह वा पञ्जीबाह्य समुदाय स्वतः अभिलेखित नहि भऽ जाइत अछि।

मूल-क्रम १–२२४क पठन, शब्दकोश आ अनुक्रमिका जरुरी शोध-साधन अछि। मुदा वास्तविक प्रामाणिकता प्रत्येक व्यक्ति आ ग्रामसम्बन्धक मूल सङ्केतसँ निर्धारित होयत। आंशिक स्मृति जँ बचल अछि तँ आलोचकक पहिल कर्तव्य ई नहि जे ओ रिक्त स्थान पूरा करथि, बल्कि ई जे रिक्तताक प्रमाण खुद पठनीय बनाउथि।

एहि प्रकारक अध्याय इतिहासक घटनासँ बेसी पाठनिर्णयक नैतिकता पर प्रकाश दैत अछि। एकटा अक्षरक गलत मिलान कखनो दू अलग परिवार अथवा ग्रामक गलत सम्बन्ध बना सकैत अछि।

रिक्त, भिन्न वर्तनी, अपूर्ण अक्षर आ लिखावट-परिवर्तनकेँ स्रोतक त्रुटि मानि स्वतः भरल नहि जाए। ‘अज्ञात पाठ’ नामसँ पाठकीय सीमा निर्दिष्ट करब बनावटी पूर्णतासँ अधिक विश्वसनीय अछि।

“The Uptip Panji is powerful because it preserves many generations, village movements, marriage routes, scholarly titles, and status markers in very small textual space.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 31]

“The Panji is a record of memory, not a machine-generated database.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 31]

“Limits, Gaps, and Editorial Principles” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

एहि अध्यायक पाठमे अस्पष्टता वा विकल्पपाठक चर्चा भेटैत अछि। आलोचनाक पहिल शर्त अछि—मूल अस्पष्ट पाठ सुरक्षित रखनाइ, तकर बाद सम्भावित पठनक औचित्य बतौनाइ; सुधारित पाठकेँ मूल अभिलेखक विकल्प नहि बनाओल जाए।

## अध्याय ३२ — Conclusion: The Panji as a Civilization Archive

एहि अध्यायक विवेचनक सन्दर्भ ओकर मूल पाठक्रम अछि। पञ्जीमे व्यक्ति, ग्राम, शाखा, वैवाहिक सम्बन्ध आ उपाधि जतेक स्तरपर भेटैत अछि, ओ सभकेँ बिना अतिरिक्त अनुमान अलग चिन्हित करब आवश्यक अछि।

एकटा मूल पञ्जी-पाँतिसँ निकसल व्याख्याक सत्यापन लेल एहन प्रतिलोम-सूचक चाही जाहिसँ शोधकर्ता विश्लेषणसँ मूल प्रविष्टि धरि फेर पहुँचथि। बिना एहन अनुक्रमक निष्कर्ष प्रभावशाली भएओ अस्थिर रहि सकैत अछि।

“The preceding chapters decoded the main Khand 2 clusters from Entry 1 through Entry 224, then supplied reader tools for terms, abbreviations, places, names, titles, reconstruction, and editorial limits.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 32]

“The Uptip Panji is difficult because it belongs to a record-keeping world in which grammar, memory, family, scholarship, and place were compressed into short formulae.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 32]

“Conclusion: The Panji as a Civilization Archive” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

सामाजिक श्रेणी अथवा पदवी एकटा अभिलेखीय सूचना अछि, व्यक्ति विषयक सम्पूर्ण सामाजिक सत्य नहि। ऐतिहासिक वर्गीकरणक शब्दानुसरण आ वर्तमान समयक मानवीय सम्मान दुनूक रक्षा करबाक हेतु सीमित स्रोत-निष्कर्ष आवश्यक अछि।

### समग्र मूल्याङ्कन

उटीप खण्डमे प्रविष्टि १–२२४क क्रम पुस्तकक अध्याय १–२४मे अनेक ग्राम-समूह द्वारा व्याख्यायित अछि। पञ्जीक पठनीयतामे ई रूपान्तर उपयोगी अछि; परन्तु समूह-शीर्षक परिवर्तन सदा वंशक जैविक विच्छेद नहि होइत अछि। ग्रामारम्भ, क्षेत्रसूत्र आ पितृ/मातृसम्बन्धक अलग-अलग भूमिकाकेँ मूल पाँतिक साथे पढ़बाक चाही।

अध्याय २५–३२क कोश, अनुक्रम आ पुनर्निर्माणक पाठ मुख्य अध्ययनक सहायक आधार अछि, प्रमाणस्वरूप मूल अभिलेख नहि। विशेषतः स्थाननामक सामान्यीकृत खोजरूप आ पाठगत मूल वर्तनी दुनू सुरक्षित रहनाइ आवश्यक अछि।

### स्रोत-विवेकक मर्यादा

समीक्षा मूल ग्रन्थक अध्यायानुक्रम, शब्दप्रयोग आ व्याख्यासँ सम्बन्धित अछि। प्राथमिक पञ्जीक स्वतन्त्र मूल-पृष्ठ, दिनाङ्कयुक्त प्रमाण, संस्कृत/तिरहुता समांतर संस्करण, आनुवंशिक प्रयोगशालाक आँकड़ा आ अभिलेखित व्यक्तिसभक आजुक वंशजक विषयमे स्वतंत्र प्रमाणन एतय नहि कएल गेल अछि।

### ग्रन्थसूची

ठाकुर, गजेन्द्र। Decoding the Panji of Mithila, Volume III। उपलब्ध मूल ग्रन्थ-पाठ।

# गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

**खण्ड ३७**

# उटीप पञ्जी

उटीपक प्रविष्टि, सङ्केत, ग्रामसमूह आ

शाखागत सम्बन्धक विस्तृत विवेचन।

मूल पाठ, सम्पादित अनुक्रम आ ऐतिहासिक

अनुमानक बीचक अन्तर एहि अध्ययनक केन्द्र अछि।

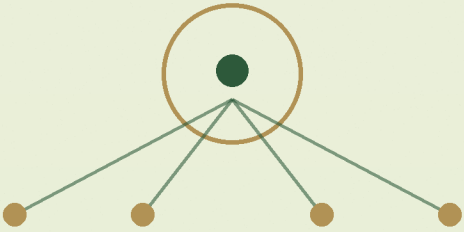

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका
ISSN 2229-547X

www.videha.co.in

Videha GitHub

प्रतिलिप्याधिकार २०२६ : गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर